पाठ 47

1. यीशु का जन्म किस शहर में हुआ था?

-बेथलहम शहर में।

2. जब ज्ञानियों ने यीशु को पाया, जिसे वे यहूदियों का राजा कहते थे, तो उन्होंने क्या किया?

-उन्होंने उसकी पूजा की।

-उन्होंने उसे उपहार भी दिए।

3. क्या परमेश्वर इस बात से नाराज़ थे कि बुद्धिमान लोग यीशु की पूजा करते थे?

-नहीं।

4. बुद्धिमानों ने यीशु की उपासना करने से परमेश्वर को क्रोध क्यों नहीं आया?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर है।

5. स्वर्गदूत ने यूसुफ को मरियम और यीशु को ले जाने के लिए किस देश में कहा ताकि राजा हेरोदेस उसे मार न डाले?

-मिस्र को।

6. राजा हेरोदेस को यीशु को मारने का विचार किसने दिया?

-शैतान ने।

7. शैतान यीशु को क्यों मारना चाहता था?

-क्योंकि शैतान नहीं चाहता था कि यीशु लोगों को पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति की शक्ति से बचाए।

8. परमेश्वर ने यीशु की रक्षा क्यों की?

-क्योंकि परमेश्वर ने यीशु को लोगों को पाप, मृत्यु और शैतान की शक्ति से बचाने के लिए भेजा था।

-क्योंकि परमेश्वर ने यीशु की रक्षा की, यीशु एक बच्चे से एक मजबूत लड़के के रूप में विकसित हुआ।

आइए पढ़ें लूका 2:40

40-और बालक बड़ा होकर बलवान हुआ; वह बुद्धि से भर गया, और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर हुआ।

-क्या यीशु ने कभी पाप किया?

-नहीं।

-यीशु ने परमेश्वर की हर आज्ञा का पालन किया, और पाप नहीं किया।

-यीशु ने परमेश्वर की हर आज्ञा का पालन क्यों किया, पाप का नहीं?

-क्योंकि यीशु का जन्म पाप में नहीं हुआ था।

-यीशु का जन्म पाप में क्यों नहीं हुआ?

-क्योंकि यीशु के पास मानव पिता का बीज नहीं था।

-क्योंकि यीशु के पास मानव मां का बीज नहीं था।

-क्योंकि यीशु परमेश्वर थे।

-क्योंकि यीशु आदम और हव्वा की संतान नहीं था, यीशु पाप में पैदा नहीं हुआ था।

-क्योंकि यीशु आदम और हव्वा की संतान नहीं था, यीशु

-परमेश्वर से अलग पैदा नहीं हुआ था।

-यीशु ने पूरी तरह से परमेश्वर की हर आज्ञा का पालन किया।

-यीशु ने कभी कुछ गलत नहीं सोचा।

-यीशु ने कभी कुछ गलत नहीं कहा।

-यीशु ने कभी कुछ गलत नहीं किया।

-क्या कोई और बिना पाप के यीशु के समान है?

-नहीं।

-अन्य सभी लोग पाप में पैदा हुए हैं।

-आइए हम यीशु की एक कहानी पढ़ते हैं जब वह अभी भी एक लड़का था।

आइए पढ़ें लूका 2:41

41-हर साल यीशु के माता-पिता फसह के पर्व के लिए यरूशलेम जाते थे।

-हर साल, यीशु के माता-पिता जोसेफ और मरियम भी फसह के पर्व के लिए यरूशलेम जाते थे।

-जब यिशु 12 साल के थे, तो जोसेफ और मरियम यीशु को अपने साथ यरूशलेम ले गए।

आइए पढ़ें लूका 2:42

42-जब यीशु बारह वर्ष का हुआ, तब वे रीति के अनुसार पर्व पर गए।

-फसह का पर्व समाप्त होने के बाद, यूसुफ और मरियम नासरत में अपने घर वापस चले गए।

-लेकिन जब यूसुफ और मरियम रास्ते पर चले, तो वे यीशु को नहीं खोज पाए।

आइए पढ़ें लूका 2:43-44

43-पर्व समाप्त होने के बाद, जब उसके माता-पिता घर लौट रहे थे, लड़का यीशु पीछे यरूशलेम में रहा, लेकिन वे इससे अनजान थे।

44-यह सोचकर कि वह उनकी संगति में है, उन्होंने एक दिन के लिए यात्रा की। फिर वे उसे अपने सम्बन्धियों और मित्रों के बीच ढूँढ़ने लगे।

-यूसुफ और मरियम यीशु को क्यों नहीं ढूंढ पाए?

-क्योंकि बहुत से यहूदी फसह के पर्व में गए थे, मार्ग में बहुत से लोग थे।

-क्योंकि रास्ते में कई लुटेरे थे, सभी लोग एक साथ चल पड़े।

-क्योंकि वहाँ बहुत सारे लोग थे, यूसुफ और मरियम ने यीशु को नहीं देखा।

-क्योंकि वहाँ बहुत सारे लोग थे, यूसुफ और मरियम ने सोचा कि यीशु अपने दोस्तों के साथ चल रहा है।

-जब यूसुफ और मरियम को पता चला कि यीशु उनके साथ नहीं है, तो उन्होंने क्या किया?

आइए पढ़ें लूका 2:45

45-जब वे उसे न पा सके, तो वे उसकी खोज में यरूशलेम को लौट गए।

-यूसुफ और मरियम यीशु की तलाश में यरूशलेम लौट आए।

-यूसुफ और मरियम ने यीशु को कहाँ पाया?

आइए पढ़ें लूका 2:46-47

46-तीन दिन के बाद उन्होंने उसे मन्दिर के आंगनों में शिक्षकों के बीच बैठे, उनकी सुनते और उन से प्रश्न करते हुए पाया।

47-जो कोई उसे सुनता था, वह उसकी समझ और उसके उत्तरों से चकित होता था।

-यूसुफ और मरियम ने यीशु को यरूशलेम के मंदिर में पाया।

-जब यूसुफ और मरियम ने उसे मंदिर में पाया तो यीशु क्या कर रहा था?

-यीशु परमेश्वर के वचन के शिक्षकों को सुन रहा था, और उनसे प्रश्न पूछ रहा था।

-यीशु भी शिक्षकों को परमेश्वर का वचन पढ़ा रहे थे।

-जब यीशु केवल बारह वर्ष का था, तब उसे परमेश्वर का वचन कैसे पता चला?

-क्योंकि यीशु परमेश्वर थे।

-मंदिर के शिक्षक चकित थे कि यीशु परमेश्वर के वचन के बारे में इतना कुछ जानता था।

-वे नहीं जानते थे कि यीशु ही ईश्वर है।

-मंदिर में मिलने पर मरियम ने यीशु से क्या कहा?

आइए पढ़ें लूका 2:48

48-जब उसके माता-पिता ने उसे देखा, तो वे चकित रह गए। उसकी माँ ने उससे कहा, “बेटा, तुमने हमारे साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया? मैं और तेरे पिता बड़ी उत्सुकता से तुझे ढूँढ़ रहे थे।”

-यीशु ने यूसुफ और मरियम को क्या उत्तर दिया?

आइए पढ़ें लूका 2:49

49- "तुम मुझे क्यों ढूंढ रहे थे?" उसने पूछा। "क्या आप नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिता के घर में रहना है?"

-जब मरियम ने यीशु से सवाल किया, तो यीशु ने क्या जवाब दिया?

-"तुम मेरे लिए क्यों खोज रहे थे?" उसने पूछा। "क्या तुम नहीं जानते कि मुझे अपने पिता के घर में रहना पड़ा?"

-यीशु का क्या मतलब था?

-यीशु का मतलब था कि वह वही कर रहा था जो पिता परमेश्वर चाहता था कि वह करे।

-यीशु केवल 12 वर्ष का था, लेकिन वह पिता परमेश्वर को जानता था।

-यीशु ने वह सब कुछ माना जो परमेश्वर पिता ने उसे करने के लिए कहा था।

-वह सब जो यीशु ने सोचा था वह परिपूर्ण था।

-वह सब जो यीशु ने कहा वह सिद्ध था।

-यीशु ने जो कुछ किया वह सिद्ध था।

-क्या यूसुफ और मरियम ने यीशु की कही बात को समझा?

आइए पढ़ें लूका 2:50

50-परन्तु वे न समझे कि वह उन से क्या कह रहा है।

-यूसुफ और मरियम को यीशु की बात समझ में नहीं आई।

-यूसुफ और मरियम को यह समझ नहीं आया कि यीशु पिता परमेश्वर की बात कर रहे हैं।

-जब उन्होंने बोलना समाप्त किया, तो यूसुफ, मरियम और यीशु नासरत में अपने घर लौट आए।

आइए पढ़ें लूका 2:51-52

51-तब वह उनके संग नासरत को गया, और उनकी आज्ञा मानी। लेकिन उसकी माँ ने इन सब बातों को अपने दिल में संजो कर रखा था।

52-और यीशु बुद्धि और डील-डौल में, और परमेश्वर और मनुष्यों के अनुग्रह में बढ़ता गया।

-क्या यीशु ने बड़े होने पर यूसुफ और मरियम की पूरी तरह आज्ञा का पालन किया था?

-हां।

-यद्यपि यीशु अन्य बच्चों की तरह दिखते थे, यीशु अलग कैसे थे?

-यीशु परमेश्वर थे।

-यिशु पूरी तरह से ईश्वर और पूरी तरह से इंसान थे।

-यीशु बड़ा होकर एक बुद्धिमान व्यक्ति बना।

-जिस तरह परमेश्वर ने बहुत पहले भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से वादा किया था, यीशु के पास बहुत ज्ञान था।

-जिस तरह परमेश्वर ने बहुत पहले भविष्यद्वक्ताओं के माध्यम से वादा किया था, यीशु परमेश्वर पवित्र आत्मा से भर गया था।

-परमेश्वर अपने वादों को कभी नहीं तोड़ते।

-परमेश्वर हमेशा अपने वादे रखता है।